मराठी और हिंदी साहित्य में दलित चिन्तन

प्रा.शरद बा. शिरोडकर, एम्.ए. एम्.फील., एम्.पी.एड्., हिंदी विभागाध्यक्ष,
गोगटे-वाळके कॉलेज, बांदा, ता.सावंतवाडी, जि.सिंधुदुर्ग-416511

प्रस्तावना

कौन है दलित?

'दलित' कहा जाने वाला ही 'शुद्र', 'अनार्य', 'अस्पृश्य', 'अछुत' और गांधी जी का 'हरिजन' कहा जाता रहा हैं| इसमे आदीवासी 'घुमंतु' अपराधशील जातीयाँ, महिलाएँ और बंधुआ मजदूर भी सम्मिलीत हैं| सदियों से इन पर विचार किया गया| इनका अपमान, शोषण, दलन, प्राताडन, किया गया| पशुओं से भी बदतर इन्हे माना गया| इमको छूना भी पाप माना गया| भगवान और भाग्य का भय दिखाकर इन्हे यथास्थिती में बने रहने पर विवश किया गया| दुसरे वर्णों की सेवा करना ही इनका धर्म निर्धारीत किया गया| सेवा कर्म से च्युत होने पर जहाँ विधान में राजकीय दण्ड किये गये, वहा पर धर्म ग्रन्थों में भी नरक का भय दिखाया गया हैं| इनमें चेतना पैदा न हो, इसलिए इनके लिए शिक्षा प्रतिबन्धित रही, वर्णाश्रम व्यवस्था द्वारा इन्हे समाज से पृथक कर दिया गया| आगे चलकर वर्ण व्यवस्था से ही जाती व्यवस्था बनी| शुद्र के घर पैदा होने वाला अस्पृश्य माना गया| चाही वह कितना ही विद्वान, सदाचारी और ज्ञानी ही क्यों न हो| एच.आर. गौतम के ये विचार (उत्तर प्रदेश सितम्बर-अक्तुबर 2002) दलित को रेखांकित करने की अधिकतर जिम्मेदारी पुर्ण कर देते हैं, क्यों कि जब हम 'दलित साहित्य' पर विचार करने बैठते हैं तो सबसे पहले यह निश्चय कर लेना होगा की 'दलित' नाम से अभिहित किये जाने वाला मानव या मानव समुह कौन सा हैं| दलित की पहचान को मुकम्मल हो जाने के उपरान्त ही अन्य बातों पर विचार किया जा सकता हैं|

ओमप्रकाश वाल्मीकी दलित की पहचान को एक सरल और सामान्यीकृत परिभाषा में बाधने का प्रयास करते हैं| दलित शब्द का अर्थ है जिसका दलन और दमन किया गया है, दबाया गया हैं, उत्पीडीत, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौदा हुआ, मसला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत, हितोत्साहित, वंचित आदी|

दलित जीवन से तात्पर्य

'दलित जीवन' हा सीधा सहज और संक्षिप्त अर्थ है दलितों का जीवन| दलित वर्ग के लोगों के जीवन समस्याएँ, उनकी जीवन पद्धती, उनके विश्वास-अविश्वास, उनकी रुढीयाँ, उनकी मान्यताएँ तथा उन पर थोपी गई निर्योग्यताओं के परिणाम स्वरुप उनका पद-दलित जीवन प्रभृति को 'दलित जीवन' के अन्तर्गत

रखा जा सकता हैं| 'दलित' का शाब्दिक अर्थ हैं कुचला हुआ | 'दलित' शब्द व्यापक रुप में पीडित के अर्थ में प्रयुक्त होता रहा हैं| परंतु आज के सामाजिक सन्दर्भ में दलित का अर्थ होगा, वह जाति या समुदाय जिसका अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था के कारण सवर्णों या उच्च जातियों के द्वारा दमन हुआ हैं| जिनको दूषित किया गया हैं, रौंदा गया हैं| इस प्रकार दलित वर्ग में वे सभी जातियाँ सम्मिलित है, जो जातिगत सोपानक्रम में निम्नस्तर पर हैं और जिनको शताब्दियों से दबाकर रखा गया हैं|

देशकाल के अनुसार दलित जातियों को विभिन्न नामों से सम्बोधित किया गया हैं| उनके लिए शूद्र, अछूत, अंत्यज, हरिजन, बाहरी जातियाँ, अनुसूचित जातियाँ (Sheduled Caste), अनुसूचित जनजाति (Sheduled tribe) आदि शब्दों का प्रयोग होता रहा हैं| इन शब्दों के साथ किसी न किसी प्रकार से असम्मान सुचक शब्दों के स्थान पर दलित वर्ण (Depressed class) शब्द का प्रयोग होने लगा हैं| और ये शब्द अब शनै: शनैं: अत्यधिक प्रचलित हो रहा हैं, यहाँ तक कि साहित्य में भी 'दलित साहित्य' नामक एक नये संवर्ग की वृध्दि हुई हैं|

दलित वर्ण में अनेक जातियाँ एवं जनजातियाँ समाविष्ट हैं| किन्तु उनके दलित होने के आधार पृथक-पृथक हैं| इन आधारों को ध्यान में रखते हुई दलित जातियों का वर्गीकरण निम्मलिखित चार वर्गों में किया जा सकता हैं| (1) अत्यंज या अछूत वर्ण, (2) कर्मिन या शिल्पकार वर्ग, (3) अपराध जीवी या जरायपेशा वर्ग, (4) आदिम जनजातियाँ|

मराठी साहित्य में दलित चिन्तन

मराठी साहित्य की दलित साहित्य 'एक उपलब्धि' हैं, उसमे दलितों की पीडा, व्यथा, वेदना को वाणी मिली हैं| डॉ.आंबेडकर ने 'शिक्षित बनो, संगठित बनो और संघर्ष करो' यह नारा दिया, जिसके कारण दलितो में चेतना की लहर दौडने लगी| धर्म परिवर्तन से प्रभावित दलित अपनी अस्मिता को जाँचन लगे| श्री. बाबूराव बागूल की धारण हैं कि दलित साहित्य का केंद्र मानव हैं| मानव के ईद-गिर्द वह घूमता हैं, तो अण्णाभाऊ साठे कहते हैं, 'मैं दलितों का चित्रण ईमानदारी एवं आस्था के साथ करता आ रहा हूँ|' साठे जैसे साहित्यकारोंने मराठी दलित साहित्य को सांस्कृतिकता प्रदान की| दलित साहित्य दलित वर्ग के हड्डी मांस से निर्मित हैं| यह साहित्य दलितों का, दलितों द्वारा दलितों की भाषा में लिखा जीवीत साहित्य हैं|

दलित साहित्य के नायक को सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक क्षेत्रों में नकारा गया हैं| दलित साहित् सामाजिक व्यवस्था के प्रति क्रांती का विस्फोट, विद्रोही, क्षोभ, आक्रोश हैं| मानव, मानव जीवन का शोषण करने वाला धर्म, संस्कृति का विकृति पर दलित साहित्य बिजली के समान टूट पडता हैं| यह साहित्य क्रान्तिधर्मी, सच्ची अनुभूति से बना, दलित समाज को जागृत करता हैं| उनमें अस्मिता, आत्मगौरव, आत्माभिमान, आत्मसन्मान एवं विश्वास का भाव उत्पन्न

कराता हैं| इसी कारण मराठी दलित साहित्य दलित मुक्ति का साहित्य बना हैं| वह एक बृहत दलित आंदोलन को बल देता हैं, जो शोषण मुक्त जातिविहीन समाज की कल्पना करता हैं|

मराठी साहित्य में दलित जनजीवन को भजन, कीर्तन, अभंग के माध्यम से संतो ने अभिव्यक्ति प्रदान की| अस्पृश्यता, जातीयता, छूआछूत पर कडा प्रहार किया| चोखामेळा, तुकाराम, नामदेव जैसे संतों ने इस कार्य में योगदान दिया| डॉ.आंबेडकर, अण्णाभाऊ साठे, बाबुराव बागुल, शंकरराव खरात, नामदेव ढसाळ, श्री.म. माटे आदि जैसे साहित्यकारों नें दलित जीवन संघर्ष का चित्रण किया| ना.रा.शेडे का 'तांबडा दगड', श्रीमती शिरसकर की 'बलि', अण्णाभाऊ साठे की 'फकीरा', 'रत्ना', बाबुराव बागुल की 'सुड', पांडुरंग कुंभार की 'गावकुस', माटे की 'उपेक्षितांचे अंतरंग', गंगाधर पानतावणे की 'विद्रोहाचे पाणी पेटले आहे', सोनकांबळे की 'आठवणीचे पक्षी', शंकरराव खरात की 'सांगावा', 'मुलाखत', 'गावशिव', 'पोतराज', 'पारधी', 'झोपडपट्टी', दया पवार की 'कांडवाडा' (काव्यसंग्रह), 'चावडी' (लेख), केशव मेश्राम की 'छायावत' (निबंध), 'जुगलबंदी', 'अकस्मात' (काव्य), 'पोखरण' (उपन्यास), माधव कांडविलकर की 'अनाथ', 'अजुन उजडायचे आहे. (उपन्यास), लक्ष्मण माने का 'बंद दरवाजा', नामदेव व्हटकर की 'अपराधी', शरणकुमार लिंबाळे की 'उत्पात' (काव्य) आदि कृतियाँ महत्त्वपूर्ण हैं| साथ ही भिमराव गस्ती, नारायण सुर्वे, यशवंत मनोहर जैसे कई साहित्यकारों ने बल दिया| डॉ.जाधव मानते हैं - 'दलितों को स्वयं का भाग्यविधाता बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य मराठी दलित साहित्य ने किया|'

हिन्दी साहित्य में दलित चिन्तन

साहित्य समाज के प्रति प्रतिबद्ध होता हैं| वह समय का सजग प्रहरी है| साहित्य में मुखरित होने वाले विषय, समस्या, प्रश्न समय के साथ परिभाषित होते रहते हैं| साहित्य परिवर्तन और प्रगति को लेकर चलता हैं| पर मानवीय समाज का जीता जागता चलचित्र प्रस्तुत करते हुये समाज उन्नति ओर दिशा निर्देश करता हैं| हिन्दी साहित्य काल, दर्शन वाद के भंवर से बाहर निकालते हुये आज इक्वीसवी सदी में विमर्शों के दौरसे गुजरता हुआ दिखाई देता हैं| युवा विमर्श, धुमतू विमर्श, विकलांग विमर्श, आदिवासी स्त्री विमर्श, अल्पसंख्यांक आदि विमर्शों तथा आंदोलनों ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की हैं|

प्रश्न यह उपस्थित होता हैं कि आज विभिन्न विमर्शों को लेकर संगोष्ठियाँ, सभा, सम्मेलन, चर्चासत्र, शोध समिक्षाओं द्वारा अध्ययन किया जा रहा हैं| क्या सच में हि इसकी आवश्यकता हैं? क्या इन विमर्शों में अभिव्यक्त होने वाली समस्याए कालबाह्य हैं, या यह सद्य स्थिती है जिसका अध्ययन करना जरुरी हैं| जब हम वर्तमान साहित्य का और समाज का सुक्ष्म अध्ययन करते हैं, तब लगता हैं कि हाँ, अध्ययन, चिन्तन, मनन की नितांत आवश्यकता हैं| ताकी हम समाज के उन्नयन में

परिवर्तन विकास सुधार के विचारों की स्थापित लहर ला सके| भले साहित्य अध्ययन का एक तबका इसका विरोध करता हैं| पर कहीं न कहीं समाज की इस सच्चाई से मुंह मोड नही सकते| हिन्दी में दलित साहित्य अब तक एक ऐसी सच्चाई को लेकर उभारा जो भोगा हुआ सत्य था| अब तक कल्पना और सत्य के मिश्रण की अभिव्यक्ति से परे, जो पाठक के हृदय को छू गया| सालों से पूर्वाग्रह दूषित मन मस्तिष्क को कल्पना एवं परम्परा के सांचे को तोडते हुये झकझोरने वाला साबित हुआ| उसने मानो जागते हुये भी गहरी निद्रा में लीन व्यक्तियों को झटके से जगा दिया था| यह साहित्य न मनोरंजन था, न परम्परागत रुप में शिक्षा देने वाला| वह एक ऐसा सच था जो हजारो सालों में पलकों के नीचे घटीत होता आया था| जिसने आजीवन घृणा, उपेक्षा, दुत्कार, अपमान, धिक्कार, डांट उपट, बदनामी, पीडा, गरीबी, दरिद्रता को सहा था| वह दलित जो हमेशा से ही गुलाम था| हिरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायते' के रुप में वह हिन्दी साहित्य में पहिली बार उभरकर सामने आया था| जिस बाद में प्रेमचंद, निराला, नागार्जुन की कविताओं ने तो अभिव्यक्त किया था| पर स्वानुभूत सत्य की अभिव्यक्ती पिछले दो दशकों से शुरु हुई थी| मराठी साहित्य से दलित साहित्य का जन्म माना जाता हैं| उसने इसे सशक्त रुप में उभारा था| स्वाभाविक ही था उसका प्रभाव हिन्दी पर पडे| इसका परिणाम यह हुआ की दलित साहित्य हिन्दी के विशाल कॅनवास पर स्पष्ट रुप में उभर कर आया|

समग्र दलित साहित्य का चिन्तन करने में ज्ञात होता हैं, कि यह साहित्य गौतम बुद्ध, कबीर, फुले, शाहू, अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित हैं| यह साहित्य मानव को मानव रुप में प्रतिष्ठित देखना चाहता हैं| जिस पिछडे समाज को कभी इंसान ही नहीं समझा गया इसके साथ अपने आप को सवर्ण समझे जाने वाली जातियों ने असमानता का बर्ताव किया| बन्धुता की भावना से यह हमेशा वंचित रहा| ऐसे समय डॉ.बाबासाहेब आम्बेडकर जैसे महापुरुष ने शिक्षा, संघर्ष, संगठन का मार्ग बताया| यही कारण था कि दलित पढा और उसने भोगे हुये सत्य को अपने साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया|

सामाजिक क्रांती में दलित साहित्य की भूमिका

क्रांति परिवर्तन का विकल्प, सामाजिक अंतराल-धरातल को हिलाने वाली चेतना हैं| मानव समाज में विकास लाने के लिए क्रांति की अनिवार्यता हैं| रुढीबद्ध समाज को दिशा दिखाने का कार्य साहित्य करता हैं| भारतीय समाज व्यवस्था जाति, धर्म पर टिकी हैं| गौतम बुद्ध, कबीर, नानक, रहीम, रैदास, भागवत संप्रदाय के संतो-भक्तों ने इस व्यवस्था पर करारा व्यंग किया| सामंतीवाद, साम्राज्यवाद को ध्वस्त किया गया| परंतु सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाली जातिवादी व्यवस्था को नहीं| लगता हैं, इसकी जड मजबूत रही है, इसलिए भारतीय समाज में एक व्यापक सामाजिक क्रांती की आवश्यकता हैं| सामाजिक कुव्यवस्था को नकारने के लिए उच्च

वर्णियों की विकृत, संकुचित मनोवृत्ति को फटकारने के लिए दलित क्रांति का होना जरुरी हैं|

दलित साहित्य जातिविहीन समाज व्यवस्था का निर्माण करना चाहता हैं| यह साहित्य मानवीय मूल्यों के प्रति सजग करता हैं| साथ ही साथ सजग संपन्न समाज निर्माण में योगदान देता हैं| यह सच हैं छुआछुत, उच्चनीचता का भाव एकता में दरारें पैदा करता हैं| यह साहित्य वर्ण भेद की जडे मिटाने का प्रयास करता हैं| मानव के अधिकारों, हकों की रक्षा करने के लिए भरकस कोशिश करना चाहता हैं| बाबासाहब के सपनों का समाज एवं राष्ट्र निर्माण करने की जिम्मेदारी दलित साहित्यकारों पर हैं| यह साहित्य सामाजिक क्रांति की सीढी हैं|

दलित साहित्य सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं को मिटाने का, बेजुबानों को जबान, घुटन से मुक्ति देने का कार्य करता हैं| यातना, शोषण, अन्याय से मुक्त समाज व्यवस्था चाहने वाला यह साहित्य हैं| डॉ.सोहनपाल सुमनाक्षर कहते हैं, यह साहित्य व्यक्ति की भीरु, अकर्मण्य और धर्मांध के स्थान पर जुझारु, संघर्षशील और कर्तव्यशील बनाकर उनमे स्वाभिमान, आत्मगौरव जगाने का कार्य करता हैं| इसका केंद्र मानव हैं| दलित साहित्यकार दया की भीख नहीं माँगता बल्कि अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता हैं| मानव के समान जीने का अधिकार चाहता हैं| दलित साहित्य उनकी आवाज रही हैं|

दलित साहित्य में दलितों की स्थिति, उनका होनेवाला शोषण, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितिक, आर्थिक परिस्थिती, अज्ञान, अंधविश्वास का प्रभाव, नारी की दशा, उनकी समस्याएँ, युवा पिढी की मानसिकता, सवर्णों की मनोवृत्ति, जमीनदारों, अफसरों की मानसिकता, परंपरागत जीवन शैली आदि के साथ नए बदलते मूल्यों, उससे प्रभावित दलित, संघर्षरत दलित समाज, अधिकार संपन्न दलित युवा तथा नेता आदि का भी यथार्थ चित्रण करके सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक क्रांती, होनेवाला बदलाव पर भी प्रकाश डाला हैं|

संदर्भ

1. दलित साहित्य की भूमिका - हरपाल सिंह, पृष्ठ 1
2. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, पृष्ठ 13, 14
3. दलित साहित्य : अनुसंधान के आयाम - डॉ.भरत सगरे, पृष्ठ 96, 97
4. हिंदी साहित्य में दलित चिन्तन, पृष्ठ 13, 14, 15
5. दलित साहित्य : अनुसंधान के आयाम, सामाजिक क्रांती में हिंदी दलित उपन्यासों का योगदान, पृष्ठ 48